

फिल्म मेरी जिंदगी का हिस्सा है, पूरी जिंदगी नहीं: रवीना

नब्बे के दशक में बॉलिवुड की टॉप ऐक्ट्रेस में शुमार रवीना टंडन का कहना है कि फिल्म उनके जीवन का एक हिस्सा है, पूरी जिंदगी नहीं है। अभिनेत्री फिल्मों की दुनिया में वापसी कर रही हैं। उनकी समकालीन अभिनेत्रियां-काजोल, जूही चावला, माधुरी दीक्षित फिल्मों की दुनिया में लौट चुकी हैं लेकिन रवीना टंडन का मानना है कि हर चीज का एक वक्त होता है।

अभिनेत्री ने बताया, मैं जब काफी फिल्मों में कर रही थी तो उस समय मैंने अपना सौ फ्रीसदी दिया था। और मेरे पास इसके बाद परिवार और अन्य चीजें करने को थी। चीजें बदलती हैं। मैं जिंदगी जीना चाहती थी। फिल्म मेरी जिंदगी का हिस्सा है, यह मेरी पूरी जिंदगी नहीं है।

अभिनेत्री ने कहा कि उनके पास आराम से फिल्मों में चुनने का मौका था।

उन्हें किसी भी फिल्म को चुन लेने की जल्दबाजी नहीं थी। टंडन की पिछली फिल्म 'मातृ' 2017 में रिलीज हुई थी। उनका मानना है कि किसी भी कलाकार को समय और उम्र के हिसाब से आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा, मुझे 'चश्मे बहूर' और 'क्या कूल हैं हम' जैसी फिल्मों की पेशकश की गई थी लेकिन मैं उन फिल्मों को चुनूंगी जिनको लेकर मैं उत्साहित रहूंगी। महाराष्ट्र सरकार ने 43 वर्षीय अभिनेत्री को संजय गांधी नेशनल पार्क का ब्रांड एंबेसडर बनाया है। उन्हें बचपन से ही वन्यजीवों में काफी दिलचस्पी है।



एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)



समाज में बदलाव लाने वाले फिल्मों में काम करना चाहता हूं

प्रतीक बब्बर

फिल्म मुल्क करने के बाद अभिनेता प्रतीक बब्बर का कहना है कि वह ऐसी फिल्मों में काम करना चाहते हैं जो न सिर्फ व्यावसायिक हों, बल्कि उनमें समाज में बदलाव लाने की क्षमता भी हो। उन्होंने डिजिटल प्लेटफॉर्म वूट के मेडिकल क्राइम सीरीज क्यू वार्ड को साइन किया है। इसकी कहानी चार ईमानदार चिकित्सकों के इर्द-गिर्द घूमती है, जो सिस्टम में मौजूद भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ते हैं।

प्रतीक ने कहा, यह रहस्य से भरपूर ड्रामा है और एक ऐसी अवधारणा है जिसे पहले कभी भारतीय मनोरंजन में नहीं दिखाया गया। कई बार मैंने देखा है कि मेडिसिन की दुनिया में नैतिकता कैसे भुला दी जाती है और लालच अपने कर्तव्य को पूरा करने वाले पेशेवर चिकित्सकों के रास्ते में आ जाता है और यही कारण है

कि मैंने इस प्रोजेक्ट से जुड़ने का फैसला किया।

प्रतीक बब्बर ने कहा, भ्रष्टाचार हर जगह मौजूद है, लेकिन यह दिन पर दिन बढ़ रहा है और सिर्फ मध्यवर्गीय और गरीब लोग इसे झेल रहे हैं। मुल्क करने के बाद मुझे अहसास हुआ कि तेजी से जागरूकता लाने का सिनेमा बेहतरीन माध्यम है और मैं ऐसे प्रोजेक्ट करना चाहूंगा जो न सिर्फ व्यावसायिक व मुख्यधारा से जुड़े हों बल्कि समाज में बदलाव भी लाएं।

हाल ही में प्रतीक बब्बर अनुभव सिन्हां कि फिल्म मुल्क में नजर आए थे। मुल्क में प्रतीक ने एक आतंकवादी का किरदार निभाया था। जिसके लिए उन्होंने कहा था कि युवावस्था के दौरान आप आसानी से बहक जाते हैं। मैं बड़े होने के साथ अधिक

बुद्धिमान होता जा रहा हूं।

फिल्म मुल्क एक ऐसे मुस्लिम परिवार की कहानी है जिसका एक सदस्य आतंकवाद में शामिल हो जाता है। समाज में हर तरफ से उठती उंगलियों की चुभन झेलते बनारस के एक मोहल्ले में रहने वाले इस परिवार की जद्दोजहद और खुद पर लगे देशद्रोही के दाग को धोने के संघर्ष की कहानी है यह फिल्म। मुल्क में प्रतीक बब्बर के साथ तापसी पन्नू, ऋषि कपूर, आशुतोष राणा और रजत कपूर ने अहम भूमिका निभाई है।

प्रतीक वेब सीरीज के अलावा नितेश तिवारी की छिछोरे में भी नजर आएंगे, जिसमें ऋद्धा कपूर और सुशांत सिंह राजपूत भी हैं। यह फिल्म फॉक्स स्टार स्टूडियोज और साजिद नाडियावाला द्वारा निर्मित होगी।

शाहरुख के बेटे के साथ डेब्यू करने वाली है श्रीदेवी की बेटी

स्टार किड्स के डेब्यू का सीजन जोरों पर है। सारा अली खान, अनन्या पांडे, करन देओल, जाह्नवी कपूर के बाद अब फिल्मी पर्दे पर एंट्री लेने वालों की लीग में जाह्नवी की बहन यानी खुशी का नाम जुड़ने वाला है। खुशी के डेब्यू की सुगबुगाहट तेज है। फिल्मी मंकी में छपी रिपोर्ट की मानें तो वह किंग खान के बेटे आर्यन खान के साथ डेब्यू कर सकती हैं।

खबर है कि करन ने खुशी के डेब्यू का जिम्मा ले लिया है। साथ ही फिल्मों में एंट्री से पहले उन्हें ग्रूमिंग क्लासेज दी जा रही हैं। दरअसल खुशी भी अपनी बहन जाह्नवी की तरह फिल्मों में दिलचस्पी रखती हैं। ऐसे में करन ने उन्हें लॉन्च करने की जिम्मेदारी ली। अब शाहरुख भी उनके बेस्ट फ्रेंड हैं। ऐसे में शायद उन्होंने सोचा हो क्यों न दोनों बच्चों को एक साथ मौका देकर लॉन्च कर दिया जाए। वैसे भी करन एक सफल लॉन्चपैड हैं। आलिया भट्ट, सिद्धार्थ मल्होत्रा

और वरुण धवन को देखते हुए तो हम ऐसा पूरे कॉन्फिडेंस के साथ कह सकते हैं। खुशी के डेब्यू को लेकर कपूर परिवार के एक करीबी ने बताया,

जल्द खुशी भी बॉलीवुड डेब्यू करेंगी और वो भी करन जौहर की फिल्म से। करन ने ये जिम्मेदारी अपने सिर ले ली है। हालांकि अभी इस बात को इतना खुलकर डिस्कस नहीं किया जा रहा है। लेकिन हां फिल्म के लिए एक अच्छी स्क्रिप्ट की तलाश शुरू हो गई है। आर्यन के साथ खुशी के डेब्यू पर उन्होंने कहा, यह करन की प्लानिंग है। देखते हैं कि आगे क्या होता है। वैसे अगर ये फाइनल हो जाता है तो इस फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार रहेगा। क्योंकि इन दोनों का नाम बड़े फिल्म स्टार्स से जुड़ा है और सोशल मीडिया में इनकी अच्छी खासी फैन फॉलोइंग है।



हर्षिता गौर ने बताई डिप्रेशन की दुनिया में पहुंचने की कहानी

ऐसा जरूरी नहीं कि फिल्मी दुनिया में कदम रखने वाला हर इंसान स्ट्रगल और मुश्किल हालातों से लड़ते हुए हार मान ले, बल्कि कुछ ऐसे भी लोग हैं जो इससे लड़ते हैं और घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं होते। जैसे कि हर्षिता गौर, जिनका आखिरी शो साड्डा हक काफी पॉप्युलर हुआ था। डिप्रेशन से बाहर निकली हर्षिता ने अपने हालिया दिनों की कहानी खुद बताई है।

हर्षिता ने कहा कि शो के खत्म होने के बाद वह डिप्रेशन में चली गई थीं। उन्होंने कहा, कई लोगों को नहीं पता कि साड्डा हक खत्म होने के बाद मैं कितने बुरे दौर से गुजरी। मुझे कुछ अन्य शोज के ऑफर्स मिल रहे थे, लेकिन दुर्भाग्य से उनमें क्रिएटिविटी को कोई गुंजाइश नहीं थी, इसलिए मैंने थोड़ा रुकने का फैसला लिया और फिर एक ऐसा वक्त आया कि

मेरे हाथ में एक भी प्रॉजेक्ट नहीं रहा। हालांकि, मुझे बुरा लग रहा था लेकिन मैं इस स्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी। इसकी वजह से मैं एक अपनी ही बनाई काल्पनिक दुनिया में चली गई और फिर मैंने अपने करियर को लेकर भ्रम पालना शुरू कर दिया कि मुझे बड़े प्रॉजेक्ट्स मिल रहे हैं और स्टारडम में जी रही हूँ।

उन्होंने आगे कहा, स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि मैंने अपने घर से बाहर तक निकलने और लोगों से मिलने-जुलने तक से इनकार कर दिया था। मैं अपनी समस्या किसी से भी डिस्कस नहीं करती, यहां तक कि अपने पैरेंट्स तक से नहीं। मैंने कॉल और टेक्स्ट मेसेज का भी जवाब देना बंद कर दिया था। कोई भी मेरी मदद नहीं कर पाता जब तक कि मुझे सच्चाई का एहसास खुद न होता कि इस इंडस्ट्री

में अब मेरा करियर आगे बढ़ने वाला नहीं।

हर्षिता ने बताया, इसके बाद मैंने एक थेरेपिस्ट और स्ट्रेस मैनेजमेंट कंसल्टेंट से सम्पर्क किया। मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं कि साड्डा हक के बाद में ओवर कॉन्फिडेंट हो गई थी और शायद उसी की वजह से मेरी वह हालत हुई थी। थेरेपिस्ट से मिलने के बाद मैं अपने भीतर के डर से बाहर आ सकी। मुझे यह एहसास हुआ कि वर्तमान को जीना कितनी जरूरी है। आज मैं अपने हर दिन को ऐसे जीती हूँ जैसे कि वह मेरा आखिरी दिन हो। मैं कह सकती हूँ कि आज मुझमें मेरा बेस्ट नजर आता है। करीब साल भर तक डिप्रेशन से लड़ने के बाद हर्षिता ने कहा, मैं अपनी जगह अब खुश और रिलैक्स हूँ। मैं हर दिन सुबह और रात को सोने से पहले 30 मिनट मेडिटेशन करती हूँ, जो मुझे पॉजिटिव रखने में मेरी मदद करता है।

